

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ १ ॥

१७१७१७ गुनुमंशु पीवा (गन्धर्वीने) वात्मा वज्र सत्त्व गताधिय विश्वकत्मा येन मन्दुत ॥
(नकाद्रुतु स्रवाश्रुतु शुद्धा वाग याग, गुनुमिक यत्रि कामाद्रुतु विनिहानि तन्मात्रं
निक सत्त्व सत्त्वा सन सत्त्वो रययद, अरय विस्मयं वाय, मरुतु यथा गुरु, कृया वृक वृद
व, लकुका विद ॥ मयूव वाक्, वाक् वचन सत्त्व, शरीर, समस्त लोक, सर्व सत्त्व वृत्त
वत्, सर्व सत्त्व याक यूपथं, दानादि रिचमानि ह्यं, दाने अदि न विद्य न साद्रिथं, आगच्छ
नादि तत्त्व न ॥ आग सत्त्व नादि न, सत्त्व वादि, सत्त्व दुःखाक, अहि साव, त्यायु त्याथ मयव, क
वृत्त, कवृत्त वाक्, हीत च तसा, अदि तत्त्व, वतं न, समता समस्त व, विरु मडाड।
उवि रुड सत्ता व या क, सत्त्वाना नाथ रु गके, सत्त्व दक व, वाजा वश्य, सत्त्वा।

संतदकवं, विस्यमह, विस्यममदयकु, अना (धनयुवाधवा, नाजावंमदू, बाधवडंमइ, अ
 रिवाकार्थतत्वहं, अरिधं कयागसमरुं सिव, तत्वहं ४ सुटवाका गुलादधि, ववनदक
 कक॥

ॐ	वैश्वानर	नीलवज्र	वज्राकिनवर्त	वज्र	दिनपद्म	विष्णुवर्ज
ॐ	वैश्वानर	सखवज्री	नलवज्री	धर्मवज्री		कर्मवज्री
यं	सुखिकनीवर्ज	उक्तवर्ज	वज्राकितांकुश	गनवाप	स वज्रायुजद्वय	
पू	अक्राय	वज्रसख	वज्रनाज	वज्रसाधू	वज्रसाधू	
				गोम		

वज्रायुज नलमासा वीणा, शिष्टविक वज्राकिन कर्मद्वय
 अ लाक्षा, माला, गीता, नृणा धूपा, पूजा, दीपा यष्टि
 वज्राकिनवर्त, वज्राकिनवर्तमाला, सूर्य, विकामलिधुज दीपपत्ति
 दे मलसंराव वज्रनल वज्रांग, वज्रकाश वज्राक्ष

प वज्राकिनवर्त
 ॐ वज्राकिन पाणि नाव वंघ
 वज्राकिन वज्रपाणि वज्राष्टु वज्राक्ष
 वज्राकिन वज्रधर्म वज्राष्टु वज्राक्ष
 वज्राकिन वज्राधर्म वज्राष्टु वज्राक्ष

धर्मलिपादस्त्रायन दानसंस्तन ॥ जह्यायमाविधिपूर्वपादस्त्रायनायासकुलिचाध्यायगु ॥ चा
 ग्वना १४ द्वापातचिनागुभया १४ तसिजघन १४ नूयाकापन उहयाकापय पदुन नील पृष्य
 नाग पद्मनाग विहिर्पचमल नूपन उहयय १४ धनसिजघन सगय जह्यातमून धनग्व
 पमंदन २ गुयातग्व २ अस्तन १ गुयात १ ग्व धूलिव्याकैनिक नूयासिजघन ग्यापूजायायमा
 मूलन जग्यज्जस्तन कर्मन यदसाधन मंथुल उपाध्यान देवतायामंथुल पादस्त्रायनाया
 पूजायाय उपाध्या कर्मचानयागुन मंथुल यायमा ॥ कर्मियाहायूजायाना चाभया सिजघन लव
 हाय जग्यज्जस्तन कर्म जग्यदूक व्याकू ३ पंकला जग्यतमिसगक १ गुमिवाय जाकू २ जग्यदू

न धर्म कल्याणय धनय त्रिमानं जग्यदनक ॥ मूलपदसाधनयामंथुल चाकपूर्वज पञ्चिमहा
 नाकू १ ॥ जाकू १ देवतामंथुल चाकलाकू १ ज्ञानैकू १ रुसगुभ्राधर्म पंकला मूलाचार्यमाताहा
 ति कल्याणयमाल जग्यज्जस्तन ५ धनय त्रिमानं दयज्ञल पूजायाना बलिविय विधि धर्मज्ञानया
 य ॥ ॥ कायस्त्राय दानसंस्तन धर्मगुयायं जिउ ॥ व्यलान मलासा कलसगं धलिमत यंचगः
 पागु दान कायसिस्त्रायनायाना पूजायाय कर्मियाहायूजायाना दानलजहाय सालमियाह
 हायूजायाना कायलजहाय बलदयकैकू १६ इकू १२ व्या अथवाकू १२ इकू १२ व्या धर्मपु
 मानगयगु दान ४० सानजाने ० यकालान सगयमाल जिलसामंथुलाकान ध्वनग्वयमाल इ
 ल ॥ ॥ निपादस्त्रायना दान बलदयकै विधिः ॥ ॥ धनलियचिकायज्ञल ॥ ॥

धर्मेतिमानिचीपुतापस्वाय कलससर्धं मरुपंचगव्य पाणु वासिवलिमानिचीपुतापकीकमव
 र्णकूपुतिसनागुयुक् २ उक्तीषविजयागुयुक् २ धसागुनिसंधडा २ गुजगुहजयगुसर्वायातयमा
 ल॥ यिनयादिगपुताप १५ विचिगुपुताप टचगुमहाताजदिपाल ट धर्मेधकपाविधिधर्पूजा
 उपाध्वानपुतापपूजायानाहापूजामानाकर्तियागलडाहाय पुतापवायक वासिवलिविधय ध
 कालि ५ कस्यैभयनद्यायहायकमान पाथयायमान दकनासमयाचकुवलिह्याय धननमाल
 पूर्वसउस्त्रिषविजया दथसमात्रिची पश्चिमस पुतिसना धर्मेवायक ॥ ॥ ॐ तिमानिचीपुता
 पविधि ॥ ॥ धर्मेतिपिथकाशन वायदयकाशनमाल ॥ सर्गधेमत धर्मेपागुमहनिद्रुयगु
 कलव १ सगया धकपापूजायाय क १ यागुर्मधुलसमाधिदनमा मध्यमर्निर्धर्पूजा

पूजाधर्मीकीसलिन ५

सचचाहालमा र्पंचगालपर्यमा पूजाधूनडासर्धं ह्याय महनीह्याय धनयमिंथधं धन
 परिं किलि १ हसलित्वनापूजायायमा धकिलिहाकमजिउ महनि मतसिकमजिउ धन
 परिं यिताह्यप्रसायमान ट गुपिथं सिद्धयडा कायामूलयानागुपिथसं तुडानापूजायानासर्ग
 धेह्याय विप्रचादकसमयाचकु पिथकायाह्यागुयर्चिं दडाया धनसगया र्पंचापचानपूजायाय
 हाहनयाय मूलपिथचडलपूनिर्धर्पिथं धकमजिउरुलगुह ॥ ॥ ॐ तिमात्रिकोपरावाह
 नविधि ॥ ॥ अथपदसाधनमाह ॥ पदसाधनयासकू निवाध्याय ॥ सतिषकूपूलकविसन
 नयालयसिउमजालपूजायायमान ॥ ॥ मगुनवीय मूलमगुलसपिदिमयामंदल ॥ ॥ म
 गुलिगुम देवताशनउ कदेवतायामनलनवायजुलो ॥ ॥ इहाधूयाक ॥ ॥ हापसूर्यगुवि

किंकिं

उक्तदेवतागुनउक्तवीय

^स
 नि कथा इति चाना कलपूरा चाना मग मलिकनयनाल ॥ अकपे हा पाया वीज कल अणि पंच
 सकल अमायिका किर्त थडा रथ सस मराच कं नय विधि थं थक यं निचास्यं गुम तुन हने नै १
 समाधि स्मृमाल पंचगव्य सिद्धनय विधि दसाल कथा उर्थं दूक देउता हा नं चाया क अग्नि देवता
 ल स्वस्य इकाया ज्ञान कर्म नित्यं नामा कर्म नया य माल ॥ विर्यं चा सकल शया द्ग्व १ या द्गु २ भावना
 पुजायाय कथनं देओ पुजा मराडल पुजा कर्माचार्य न मात्रि किं पुजाया के धने धुने क द न
 साहु ल देव क भोते चोया ल अग्नि देवता ल सोस्यं इकाया ध्ये पुसान पुया ज्ञान कर्म नित्यं नामा
 कर्म नयाय वलिविय चाक्र पुजा मराडल धिले लुति विपुजा दक्षणा बाधां निसला समयाचक्र
 कौला मधि नू धने दुसो पुहु या क्रिया जुलो ॥ ॥ अग्नि स्थापन या विधि ॥ हापां विधि थं थक

वा मुनु पु लि प उं गाली न तिय लु भं गु नि स्थाय २
 ये ॥ अर्लि इ नाय काय कल दोय ल सोया ह या गुरु या ख व सत य अग्नि ल सोस्य ह या गुरु या ज व सत
 ये भोत ल चोया ल अग्नि देवता जज्ञ सत य ॥ निचाय गुरु मराड वलि पंचगव्य सिद्धनय मराड थि
 ले स्नान नने लुति त्रिसमाधि कल शर्दि पुजा जज्ञ पुजा सिं पुजा धन सुबेला सलाचकं १ ल स्यनं सि
 ना द्वा अग्नि काया गुलि चाना व १ हरी इ ना खलि वा का काया जज्ञ स मिच्या के अग्ना हुति देव पुजा दे
 वता हुति धुने व दु ल देव यात फल प्रासन कर्म नयाय ॥ वासि वलि विय पुं च धारा लै प था काली
 न अ प चा सत या हाय कोय के आहु विय ल १ स्यनं चाक्र पुजा मराडल धिले लुति सद्यं दाय चित पुजा
 दक्षणा बाधां निसला शेषा हुति वलि विसर्जन वलि दोय किला सज्ञ कथा पाली याय धुने क मुज
 कर्म उपाध्या खल स यात धोति र्हा हुता विष स क स्यां स्नान याय माल ॥ संध्या विच का ब सिला हु

निज्जलनथाकष्ये विवहसाय ॥ निचाय गुरुमराडुलहने ॥ गुरुमराडुसमाधिह्रीं ॥ यापोपनिमाल
 ॥ पंचगव्यकाय मूलकर्मउपाध्यायिनी मुडापुजायानामुडीतियेसिद्धतय आदिपुजा पुनिपादपुजा मो
 होनि साधन आदि काय मालसाय मराडुलधिले नदिनस्कार रागमाला विचसरोरुह मूलकर्मउपा
 ध्यायस्नानार्कपि आवेशमाल मराडुलविसर्जन समधि अनिल कलसपुजा अनुन्नर अग्निस्थाप
 नर्त्त ॥ स्यनमाल त्रिनीलोयन सामकिपुजारत्नवर्ण कुम्भपुजा कुम्भनिभाजन धुप उल्लेखानर्त्त
 आवेश स्त्री ॥ स्त्रीनृत्य नमः हं देवपुजादेवचा आहुति ज्वलितवज्रात्तर वलिपूर्व द्वारास्नित क
 र्मनृत्य मात्रिकाकिरं पुजा औखवर्त्तनपूर्वचार्य यानर्त्त व थाकलियानर्त्त निलयातमुडीतिय
 के जोगिनीन्यास कोलाई सिनाहुति सर्वबुद्ध पूर्णाहुत्य सुनापातदुय महाकसानिलहिय मूलनया

हाशमरणा उपाध्यासुन्यनसालिलहिय कर्मनृत्यअवनिनिहित नहिय पूर्वाचार्यनृत्यत्रि
 हन्दा लहिये दक्षिणाचार्यनृत्य धुक्सालिलहिय गुजजमानथाकालि पश्चिमाचार्यनृत्य सा
 लिमुन्य उन्नराचार्यनृत्य सालि भुन्य ध्वजजमानपित्तयायगुया सेगुयानुसामेगुकेथु ॥ कौमा
 रीपूजा मराडुलधिले पूर्णाहुत्य ग्ययवा सधंतय चिपूजाहसना वाधानिसना कौमारिपूजा हो
 य देगुसत्य बाहिरहोय जजमान ^{वकीकु} समयाचक्र शेषाहुति सरव्याहुति सिमधतले विवहसला
 मुनेचान्न संहार जयैर सिद्धपुरुजकक्षेया वलि होय मूलयावलि होय मुम्बाल गनचक्र
 कलंकक्षेया ॥ ॥ नसनेवमूलयावलि होय मेगुवलिस्थापनायाय अहोरात्रत्यचापेक
 यी सरव्याहुतियांनुसीथथं विवहसाय थाकष्ये स्त्री ॥ यागुरुमराडुल समाधिवलिमाल

सूर्या अर्घ्यं गुरुमराडल आदिसकर्ता अग्निस्थापनं पुहुया थ्यं क्रिया जुल यालनयाय मफु साज
 कथा धिंतया पुजायाय गुरु ह्म देवयात अन्न प्रासन कर्म तथाय मेगु व्या कं उ थ्यं समया चक्र भो
 नयाया ॥ २ ॥ रात्रिया शिला हुति ज्वलनं थाकपे पुजायाय गुरु सकर्ता उ थ्यं किरं च चाजक म्बाल
 ॥ ३ ॥ स्वहुया दिन सै उ थ्यं हु देवयात वृता देशतयाय माल ॥ ॥ रात्रिया उ थ्यं किरं च चा
 माल ॥ ४ ॥ पूर्णा पुहुया अभ्यं नरया जुसा शिला हुति ज्वलनं थाकपे ह्म ॥ स्था उ थ्यं दिन स
 जुलो लिचाय गुरुमराडल पंच गव्य द्याय मुडी नित्ये मु च्चाल यात्र पुजा सालि पुजा सिद्ध तये
 देव पुनिपाद पुजा महानि साधन आदिकाय ताल ह्म यनं दिन मस्कार राग मात्ता विश्व सरो ह्म
 समाधि अनिल कल स पुजा अनुन्नर हो म च चा त्रि निलोपन देव पुजा देव च चा मराडल पुजा

स्थिति माल २६
 मात्रिका किरं जु ब्रह्म ही कर्माचार्य पुजायाय गुरु देवता हुति धृते धुन का वहु ह्म देवयात ह्म कर्म
 पुनिष्ठा सफुलि स्वया वयाय ओह हा कोल स्वां द्याय सासि वलि विष्णु तपा १३ सवलि विय आ हुति
 विय योगि नि न्यास कोला ०० वैस्वान ल दुय पुर्णा जु दुये सु ला पात दुये सालिल हिय मूल नृत्य हाडा
 भरणा मेगु जु क ज ज मान र्पिं थ्यं मेगु या कं थ्य मेगु हु कोमारि पुजा मंडल धिले गवय ग्वाल दुये सूला
 यात स नूल ति ४ तथा पूर्णा दुये विं बह मुये जजर सा काय स धी तय चित पुजा द शरा वा धी निसला
 गुरु यात जथा श्र धा नू ओह वस्त्र विय दिगु समय द्याय कोमारि पुजा दोय दिगु समय काय वा हिर
 समया बक्र सेवा हुति वलि विसर्जन संहार मराडल त्रि वं चा स कल सा दिं धोये भे वत वलि सासि वलि
 द्योये त्रि पं चा स कल शाल वहाय रज काया स क स्थातं शेल स भति २ तये वाकि वी ज क ल श सै त सार ज

चुय कल द्योय मफतसा कहे पुहु वसा धन जज्ञया ना चतुर्थि रव रज चुय कल वने मुन कर्म बार उपाध्या
दिगा चार पि स क ले वने माल पुसि सवना नवना ग सा नार ज चुय के ली धनु या ह्या पि ताल पुसै ल सो
या कया चिकि धं गु मरा तु ले तया पंचो पचार पुजा या य मानय ॥ ध पुहु सय को मारि विज्या च के या त था कपे
विधि थं जु ल ॥ मुन कर्म उपा ध्या स्व स्या गु रु मरा तु ल माल मुन पंच गव्य द्वा य काय पद सा धना या
गु मरा तु ल स पंच गव्य हा या क सिद्ध थाय मरा तु ल चो या ॥ उक्तं च त्रिकां विदलं पप्रत दा ह्य वेद पत्र कं
षट्को रां बर्तु लं चैव चतुर्षष्टि दलानि तं वजा वली त था ज्वा ला लि ये च विधि ना मु धः अति गु ह्य त म त्रे
रा वजु सत्व व वो य था ॥ ध वो या मरा तु ल पुजा या य पंच सालि पुजा षट् चक्र पुजा मरा तु ल दी दिग्बलि न
स वलि दि ये सिद्ध त ये देव प्रति पाद पुजा मह नि सा धन पंचो पचार पुजा आदि का य महु मरा तु ल धि

ले सुति वज्र वारा ही दे गु नि या ये वलि सद्य म त था पि पुजा देव पुजा चक्र न न्या पुजा धुति धुने व ली
१ स्पे न ता य हा फो ल खान ज्व ना व ति सा शर म वं जा य या ना कौ मारि का य क ल द्यो य देवी विज्या य व
न सो या ह्य व स ना या हा या क चक्र स विज्या च के स क त्या तं अर्घ या के धु ने व द्वा सि नि स्पर् विधि पूर्व
न पु जा या य धु न का व आ दि का म सह भो ज न स पंच सालि ल हि ये ध लि आ दि धु न का व क ली षट् को
य मरा तु ल धु ने सु ति सद्य त य चित पुजा द क्ष रा ना भु जा य य देवी लि हा वि ज्या च के कौ ना म धि
भू लो को त्रे जो भो ज पृ थ म भा ग च न्द्रो गु त्म सा न अर्थ भा ग क ली ष भा ग त या भो ज न धु मी गा
रि स्मे त द्यो य शो ष व लि सु र व मु द्दि पा म क सि ध या स्मे त माल जु ल ॥ ॥ ध नी ले पी ठ ली ते या त
क ल ज्व ल पु जा वि या वि स ली पि ठ स म हा च क र त य क र द्यो य ॥ ॥ ध नी लि य धि लि ते या त क ल स पु जा ज्व
ल पु जा या ना य चि दे व लि त य क ल द्यो य क ल ली द्यो य ॥ ॥ ध नी लि आ षा ल लि ते या त कु म्भ पु जा जार

विधिआषाढलितेगुलिथ्यंजुल॥ ॥थनलि विहावियगुदेखायाथ्यंजुल॥ ॥थनलि
 गुहसमगुदेखायाथ्यंजुल॥ ॥थनलिवनजात्रावनसंजिउं योजिनीयाथासंजिउंयुजा
 यायगुथधाथ्यंजुल॥ ॥थनलिभस्मप्रवाह।इक्षिदुबलेसंजिउं पुलातनिमतमगा
 रभाहुति।चवापेकुअहोरात्रयाथ्यं पुलादयवभस्मप्रवाहयाय विधिथसफुलिचोथ्यं
 जुलो॥ ॥इतिअहोरात्रचतुर्थजिज्ञविधिकंथजुल॥ ॥सम्बत् २२५ मिमाघ
 कृष्ण ३ पदसाधन ७ अग्निथापन ११ पूरणाया नादिनयनवाहलया नाद्याकारविकि
 धन न सेगुसअहोरात्रचतुर्थजिज्ञया नावेस मूलगुरुपलिसा मर्षवाहलया वज्रा
 चार्य चतुरात्रकमोचार्यनभवाहलया वज्राचार्य देवदुर्लभ उपाध्यामर्षवाहलया रत्नविलास
 दुर्गवाचार्यकावाहलया श्रीरत्न इक्षिणाचारकावाहलया ज्ञानविरसि पश्चिम धाकावाह

नयाकवितानन्द उन्नरुमर्षवाहलया कुलमान् थनेजुयाव धचोयातयागुविधि न ज्यासि
 धयकाजुल॥ ॥सेगुदेवयाजुसा मेगुर्कथजुल॥ ॥गुंवाहादेवयाजुसा मेगुर्कथजुल
 अथवा माहायानयामतनुसी मेगुर्कथजुल भुम्ह॥ ॥

३२ (नडागंभानियाट०)

३३ (मेहनभानिसयाट०)

३४ (दामावाभानिसयाट०)

३५ (यिर्वगुयाट०) आदधनयाट०

३६ (जिधियुनीवायाट०)

३७ (जामावायाट०) नागजनयाट०

३८ (रुनयिसयाट०) आवाहनयाट०

३९ (वैदधनयाट०) शायजनसियाट०

४० (गुवाहनसयाट०)

४१ (नमावृद्धाययाट०) स्वागतवैद्ययाट०

४२ (धमदसयाट०) वाकायाट०

४३ (वैधनियाट०) गमनसयाट०

४४ (वैद्ययाट०) सप्तमकाययाट०

४५ (कालिसयाट०) काथुपियियाट०

४६ (तंभुतिथसयाट०) लीतिगनयाट०

४७ (स्वानवयनियाट०) लुगयन्कियाट०

४८ (स्थीविद्याधनयाट०)

४९ (पनतिपुद्गसयाट०) वागमतियाट०

५० (गमकलुसयाट०) लीखमानसयाट०

५१ (लैपुद्गयाट०) ददवायाट०

५२ (नानागनयाट०)

५३ (लुंभुतिथसयाट०) लूतिहासयाट०

५४ (किमकासयाट०)

५५ (पातानयुनिशखडागयाट०)

५६ (माहानसखडागयाट०)

५७ (कुनरतिनर्दकासयाट०)

५८ (काथुवगुसयाट०)

५९ (थथुगुकायुसखडागयाट०)

६० (लोकेधनसयाट०)

६१ (वैद्यगनाउसयाट०)

६२ (कालिदरुसयाट०)

६३ (वलिगनसखडागयाट०) कनखसयाट०

६४ (मरुणीपव्वगसखडाग०)

६५ (वावासखडायाट०)

६६ (शवलिसनयाट०) खडाग०

६७ (कंवानसखडागयाट०)

जायुलिकृशा ॥ नागय यगय ॥
 क्षमश ॥
 सिनरिशा ॥
 वृक्षिशा ॥
 वृक्षिशा ॥
 व्यानयन ॥
 वनगगसि
 वीनायसि
 वूनसि
 इवनसि
 अवनसि
 कायूलास
 कृष्ण
 वानानसि
 याक्षन
 नागकशन
 यवनतेश ॥
 यवनगध
 यवानुग
 वृक्षसवृन
 वीर्यगु
 ववनव
 वृक्षानु
 वननकन

एथनीलसाददायक
 कर्लेगदुजा
 वीगुदुनर
 निमिवायानर
 अद्वानया
 सादुदायक
 एथनीसादायक

एकासिक्तथ
 वामयजाइ
 अद्वानयात
 यवानुग यवनगध
 सिनरिशा वृक्षिशा
 वानयन दवननसि
 वृक्षानु वपसि
 नसायसि
 ववननसि उवनसि
 अष्टानु ववननसि
 ववानुसाति उवन
 नासा कसान

१ व्याकृष्णवर्तिलिपिगधनधन २२
 २ व्याकृष्णपाट १ गठपात १ २३
 ३ स्नानुसपाट १ नवनिगपाट १ २४
 ४ साइनसपाट १ सम्यगसपाट १ २५
 ५ वृक्षसपाट १ लोहापाट १ २६
 ६ अंशुलिपाट १८ ब्रदक
 ७ गनदसपाट १
 ८ आस्थिपाट १ तादनपाट १ २७
 ९ कगिसपाट १ निनितासपाट १ २८
 १० शानुसपाट १ जालंधलसपाट १ २९
 ११ वानिश्वासपाट १ जोदक ८
 १२ वृद्धनवसपाट १ यासिकसपाट १ ३०
 १३ कमलानिधसपाट १
 १४ नैमाधिसपाट १ ॥ हिवपाट १ ३१
 १५ पर्ववृक्षिपाट १
 १६ धर्कपाट १ कगक दवगिनय
 १७ कर्कशसपाट १
 १८ लोतिसपाट १ ब्रदक
 १९ यवनयनायसपाट १ यादक
 २० वृगसपाट १ आनि
 २१ सुनसिमलकान
 २२ नगिददसपाट १

(धनद्विष्टि) १, अइवानपाग ३
 (अजमय) १, २० धृतिपू १, २० र्वचगन्ध
 (विमानाहा) १, २० लिमीवापाग १, ३
 (र्वचधायक) १
 (दकषादडाकृदर्य) १, वलियागदं १
 (वोलेवडायागदं १, गुनुरागठरु
 यथहाकि, दकषा, करुयाग
 (गम्वनधनिपाव ५)
 (अिगुनि, ललिक, वन, गुर्लरा
 (मंरीता, कृया, पाल, कनदि
 (स्रगधम, र्वधाय
 (र्वचगन्ध, र्ववासर, अरध्वग २५
 (गुकनपाग ६
 (अनचग २५
 (धर्तवलिसकाययात
 (धर्तचाकूडानिमकुनयातर १॥
 (यान्कडागानिकयूजायागदयकविधि
 (यूजाग १, जायूजाश १
 (रडागयाग १५
 (खालयाट ७
 (रुसखायूनजाकह ३ मायूअ
 (अजायागकु ५
 (वलिचिकि ५, ६

(धनति, वृथीविजाचना ॥ तमाकस्मान
 (कनगयूजा, र्वचतेश १ वलियाग ४
 (वृनरु, अर्ध
 (वय, वन,
 (धृतिवृथिजाचना
 कामाअग्निजुरु
 धर्तकासिक्कुरु
 दूजा ॥

(एकासिक्कुरुदूजा
 (क्षामश १, सिनुठि १
 (रुहिश १, दानव १
 (दुर्धुश १
 (अइवानपाग ४
 (र्वचामृग
 (र्वचगन्ध,
 (क्षामति
 (दर्वदानुति
 (र्ववासिने
 (वक्रनसि
 (र्वयसि
 (नसाप्रसि
 (वयनसि
 (वृनसि
 (अर्धयसि
 (रुनरुदुम
 (यनाससि
 (रुन

(धनलिजवालोयन ॥
 (क्षामश १, सिनुठि १
 (रुहिश १, मुर्धुश १
 (क्षामसि
 (वृनसि, र्वयसि,
 (इवनसि, भनकानसि
 (निनाधृति, लिर्क ० कि
 (क्षामश १, सिनुठि १
 (अइवानपाग ४
 (र्वचान, निमिवायाग २
 (सायागद ० यन २
 (मूयाशीनसावाय
 (०००० नकनन २, र्वहायक
 (क्षामश १, मादडाअग्निजुरु
 धर्तिजवागामन ॥

[illegible]

ये कानां मे वक्राणां प्रवृत्तिः॥

मन्त्रिभिरुत्तरं यत् ॥

卷一百一十五



(अक्षानागद्विधाकीवलकुङ्कुयागकयक
 (कृष्णाशजायुजाश)
 (यवसुगकाग्वन)
 (कामानिसुगका,
 (अइवानपाग)
 (कीनलसुग)
 (वाकनसुगन)
 (सिभनिसुगन)
 (मनयाग्वन)
 (आकासमानयुज)
 (नृविगश)
 (दिक्रिगश)
 (यवनलश)
 (लीलककुलि
 (शीखलु, कृकम
 (कयून
 (शीखलुवीग
 (नकयलुनवीग
 (दिद्यालुका
 (धनकसि
 (सामन, यनि
 (इइसायापाग
 (कवमीनाश
 (ययग्वन)
 (मइमानक)
 (आदिअक,
 (कनसयाग
 (पववदि

यत्रेअप्रधि।
 (आगमसुनसा
 (सूर्योद्युनमलुत
 (धनकाव, चादन
 (यनवायावग
 (मडागानना,
 (मडानगियधनका
 (सिधुग,
 (आदिसमय,
 (मलुनधिन,
 (गनकाय,
 (नद्धिनमस्त्वान
 (आदिनकधन
 (कजघेउमगव,
 (उमनस्वर्धग
 (आगमकनसागन
 (वृत्तियामूडानमगि
 (यगव ॥ २०३ ॥

(२०३ ॥ २०३ ॥
 (२०३ ॥ २०३ ॥
 (२०३ ॥ २०३ ॥
 (२०३ ॥ २०३ ॥
 (२०३ ॥ २०३ ॥

(शीउकजसत्वायनमकुर्ग ॥
 (वहीनविदानदयकविभन ॥
 (जायांयुनृगिष्ययनिका ॥
 (अजमानयाक
 (युनृयुधमना,
 (युनृस्ययवर्धमंवाग्वय
 (मनृयुन, कर्मोयान
 (उपायादा, धागिस्स्ययय,
 (निर्वेवकसायावशग,
 (युजुधमतायातदयक,
 (कनंनयुजादानन,
 (युसयुजा, आजमानन
 (मंलुतधिनक, त्वानवायक
 (होआययवादान,
 (कीयागयदसस्वयाव
 (वादान, वहीन, कृशवसी,
 (दयनमंयन, धुगिदयक
 (युदयायुगनइयमान
 (धुगिधनदानकिवनतनक
 (सयनग, कनसासिधक,
 (दक्षम, विसर्जन
 (धुगिधनयानया ॥

कोसि
नेचार्सि

वमसि ६
द्वमसि १
समीनसि ८
द्वमसि २
द्वमसि १०
दीवामसि ११
वृक्षतनूतसि १२
पुष्पयसि १३
वेकंसि १४
अवसि १५
कदंसि १६
गंगावसि १७
द्वद्वमसि १८
नाहासि १९
वृक्षसि २०
सनि ०२१

द्वयकदान २४
द्वयगतय २५
कदान १०
समसवीज
गतय २६
युयु २७
नक्षत्र २८
नक्षत्र २९
ययक ३०
ययक ३१

वृक्षतनूत २४
शीखलुयुनि २०
नक्षत्र २५
युयुनि २६
सर्वग १०८
कक्ष १०९
शीन ११०
तालि १११
यान ११२
जक्ष ११३
सर्वग ११४

वृक्षतनूत २४
शीखलुयुनि २०
नक्षत्र २५
युयुनि २६
सर्वग १०८
कक्ष १०९
शीन ११०
तालि १११
यान ११२
जक्ष ११३
सर्वग ११४

द्वयकदान २४
द्वयगतय २५
कदान १०
समसवीज
गतय २६
युयु २७
नक्षत्र २८
नक्षत्र २९
ययक ३०
ययक ३१

१८ त्वनसकि
१९ न. लाव
२० ययकवान
२१ ममसि
२२ नागयतयु
२३ गनवान वलिष्ठय
२४ तिवृजी कृपजीक
२५ ययिवान स्वाइतल
२६ ययवान वधान
२७ ययवान स्ववध
२८ ययगलन युयुन
२९ ययगपत युयुन
३० ययनायन कृचन
३१ ययनियतमानक
३२ ययनयमानक
३३ ययान २
३४ अरुमलुमसिमानक

१८ त्वनसकि
१९ न. लाव
२० ययकवान
२१ ममसि
२२ नागयतयु
२३ गनवान वलिष्ठय
२४ तिवृजी कृपजीक
२५ ययिवान स्वाइतल
२६ ययवान वधान
२७ ययवान स्ववध
२८ ययगलन युयुन
२९ ययगपत युयुन
३० ययनायन कृचन
३१ ययनियतमानक
३२ ययनयमानक
३३ ययान २
३४ अरुमलुमसिमानक

१८ त्वनसकि
१९ न. लाव
२० ययकवान
२१ ममसि
२२ नागयतयु
२३ गनवान वलिष्ठय
२४ तिवृजी कृपजीक
२५ ययिवान स्वाइतल
२६ ययवान वधान
२७ ययवान स्ववध
२८ ययगलन युयुन
२९ ययगपत युयुन
३० ययनायन कृचन
३१ ययनियतमानक
३२ ययनयमानक
३३ ययान २
३४ अरुमलुमसिमानक

१८ त्वनसकि
१९ न. लाव
२० ययकवान
२१ ममसि
२२ नागयतयु
२३ गनवान वलिष्ठय
२४ तिवृजी कृपजीक
२५ ययिवान स्वाइतल
२६ ययवान वधान
२७ ययवान स्ववध
२८ ययगलन युयुन
२९ ययगपत युयुन
३० ययनायन कृचन
३१ ययनियतमानक
३२ ययनयमानक
३३ ययान २
३४ अरुमलुमसिमानक

१८ त्वनसकि
१९ न. लाव
२० ययकवान
२१ ममसि
२२ नागयतयु
२३ गनवान वलिष्ठय
२४ तिवृजी कृपजीक
२५ ययिवान स्वाइतल
२६ ययवान वधान
२७ ययवान स्ववध
२८ ययगलन युयुन
२९ ययगपत युयुन
३० ययनायन कृचन
३१ ययनियतमानक
३२ ययनयमानक
३३ ययान २
३४ अरुमलुमसिमानक

अमलायात्रक्रीन

॥ ५५ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ५५ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वासुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

卷之五

नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible][illegible]

मालि विप्रमुपराधः कृतदुष्टाङ्गनिवलिप्रवधानासक्तिः

महायानजुमासिलाहुतिकठयायडु

[illegible][illegible]